Shiv Chalisa and Aarti

दोहा

जय गणेश गिरिजा सुवन,
मंगल मूल सुजान।
कहत अयोध्यादास तुम,
देहु अभय वरदान ॥

चौपाई

जय गिरिजा पति दीन दयाला ॥
सदा करत सन्तन प्रतिपाला ॥1॥

भाल चन्द्रमा सोहत नीके ॥
कानन कुण्डल नागफनी के ॥2॥

अंग गौर शिर गंग बहाये ॥
मुण्डमाल तन क्षार लगाए ॥3॥

वस्त्र खाल बाघम्बर सोहे ॥
छवि को देखि नाग मन मोहे ॥4॥

मैना मातु की हवे दुलारी ॥
बाम अंग सोहत छवि न्यारी ॥5॥

कर त्रिशूल सोहत छवि भारी ॥
करत सदा शत्रुन क्षयकारी ॥6॥

नन्दि गणेश सोहै तहँ कैसे ॥
सागर मध्य कमल हैं जैसे ॥7॥

कार्तिक श्याम और गणराऊ ॥
या छवि को कहि जात न काऊ ॥8॥

देवन जबहीं जाय पुकारा ॥
तब ही दुख प्रभु आप निवारा ॥9॥

किया उपद्रव तारक भारी ॥
देवन सब मिलि तुमहिं जुहारी ॥10॥

तुरत षडानन आप पठायउ ॥
लवनिमेष महँ मारि गिरायउ ॥11॥

आप जलंधर असुर संहारा ॥
सुयश तुम्हार विदित संसारा ॥12॥

त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई ॥
सबहिं कृपा कर लीन बचाई ॥13॥

किया तपहिं भागीरथ भारी ॥
पुरब प्रतिज्ञा तासु पुरारी ॥14॥

दानिन महँ तुम सम कोउ नाहीं ॥
सेवक स्तुति करत सदाहीं ॥15॥

वेद नाम महिमा तव गाई॥
अकथ अनादि भेद नहिं पाई ॥16॥

प्रकटी उदधि मंथन में ज्वाला ॥
जरत सुरासुर भए विहाला ॥17॥

कीन्ही दया तहं करी सहाई ॥
नीलकण्ठ तब नाम कहाई ॥18॥

पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा ॥
जीत के लंक विभीषण दीन्हा ॥19॥

सहस कमल में हो रहे धारी ॥
कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी ॥20॥

एक कमल प्रभु राखेउ जोई ॥
कमल नयन पूजन चहं सोई ॥21॥

कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर ॥
भए प्रसन्न दिए इच्छित वर ॥22॥

जय जय जय अनन्त अविनाशी ॥
करत कृपा सब के घटवासी ॥23॥

दुष्ट सकल नित मोहि सतावै ॥
भ्रमत रहौं मोहि चैन न आवै ॥24॥

त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारो ॥
येहि अवसर मोहि आन उबारो ॥25॥

लै त्रिशूल शत्रुन को मारो ॥
संकट से मोहि आन उबारो ॥26॥

मात-पिता भ्राता सब होई ॥
संकट में पूछत नहिं कोई ॥27॥

स्वामी एक है आस तुम्हारी ॥
आय हरहु मम संकट भारी ॥28॥

धन निर्धन को देत सदा हीं ॥
जो कोई जांचे सो फल पाहीं ॥29॥

अस्तुति केहि विधि करैं तुम्हारी ॥
क्षमहु नाथ अब चूक हमारी ॥30॥

शंकर हो संकट के नाशन ॥
मंगल कारण विघ्न विनाशन ॥31॥

योगी यति मुनि ध्यान लगावैं ॥
शारद नारद शीश नवावैं ॥32॥

नमो नमो जय नमः शिवाय ॥
सुर ब्रह्मादिक पार न पाय ॥33॥

जो यह पाठ करे मन लाई ॥
ता पर होत है शम्भु सहाई ॥34॥

ऋनियां जो कोई हो अधिकारी ॥
पाठ करे सो पावन हारी ॥35॥

पुत्र हीन कर इच्छा जोई ॥
निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई ॥36॥

पण्डित त्रयोदशी को लावे ॥
ध्यान पूर्वक होम करावे ॥37॥

त्रयोदशी व्रत करै हमेशा ॥
ताके तन नहीं रहै कलेशा ॥38॥

धूप दीप नैवेद्य चढ़ावे ॥
शंकर सम्मुख पाठ सुनावे ॥39॥

जन्म जन्म के पाप नसावे ॥
अन्त धाम शिवपुर में पावे ॥40॥

कहैं अयोध्यादास आस तुम्हारी ॥
जानि सकल दुःख हरहु हमारी ॥41॥

दोहा

नित्त नेम कर प्रातः ही,
पाठ करौं चालीसा।
तुम मेरी मनोकामना,
पूर्ण करो जगदीश ॥

मगसर छठि हेमन्त ऋतु,
संवत चौसठ जान।
अस्तुति चालीसा शिवहि,
पूर्ण कीन कल्याण ॥

शिव जी की आरती

जय शिव ओंकारा, ॐ जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्द्धांगी धारा ॥
॥ ओम जय शिव ओंकारा... ॥

एकानन चतुरानन पंचानन राजे ।
हंसासन गरूड़ासन वृषवाहन साजे ॥
॥ ओम जय शिव ओंकारा... ॥

दो भुज चार चतुर्भुज दसभुज अति सोहे ।
त्रिगुण रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहे ॥
॥ ओम जय शिव ओंकारा... ॥

अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी ।
त्रिपुरारी कंसारी कर माला धारी ॥
॥ ओम जय शिव ओंकारा... ॥

ॐ जय शिव ओंकारा
सुखकारी दुखहारी जगपालन कारी ॥
कर के मध्य कमंडलु चक्र त्रिशूलधारी ।

॥ ओम जय शिव ओंकारा... ॥
सनकादिक गरुणादिक भूतादिक संगे ॥
श्वेतांबर पीतांबर बाघंबर अंगे ।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका ॥
॥ ओम जय शिव ओंकारा... ॥

लक्ष्मी व सावित्री पार्वती संगा ।
पार्वती अर्द्धांगी, शिवलहरी गंगा ॥
॥ ओम जय शिव ओंकारा... ॥

त्रिगुणस्वामी जी की आरती जो कोइ नर गावे ।
कहत शिवानंद स्वामी सुख संपति पावे ॥
॥ ओम जय शिव ओंकारा... ॥